International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(II), July-September, 2026, pp. 76-83

21वीं सदी में भारत–जापान संबंधों का एक नया दौरः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

देवी लाल[1*] | डॉ. सुलोचना[2]

[1]शोधार्थी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशक एवं सहायक आचार्य, श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय महाविद्यालय, सीकर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: devilalbhadrwal@gmail.com

Citation: लाल, देवी एवं सुलोचना (2026). 21वीं सदी में भारत–जापान संबंधों का एक नया दौरः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(03(II)), 76–83.

सार

वर्तमान शोध पत्र 21वीं सदी में भारत एवं जापान के बीच विकसित हो रहे द्विपक्षीय संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। वर्ष 2000 में 'वैश्विक साझेदारी' से आरंभ होकर 2014 में 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' तक की यात्रा इन संबंधों के गहराने एवं बहुआयामी होने का प्रमाण है। यह अध्ययन आर्थिक, रणनीतिक–रक्षा, परमाणु, बुनियादी ढाँचा, हिंद–प्रशांत एवं सांस्कृतिक आयामों पर केंद्रित है। द्विपक्षीय व्यापार वित्त वर्ष 2020–21 में 15.33 अरब डॉलर से बढ़कर 2025–26 में 27.47 अरब डॉलर तक पहुँचा है। जापान भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय विकास सहयोगी है तथा उसकी संचयी व्क। प्रतिबद्धता 6.978 खरब येन से अधिक है। मुंबई–अहमदाबाद उच्च–गति रेल (बुलेट ट्रेन) परियोजना, ACSA जैसे रक्षा समझौते, परमाणु सहयोग समझौता (2016) तथा क्वाड (QUAD) का पुनरुज्जीवन इस 'नए दौर' के प्रमुख स्तंभ हैं। 2025 में दोनों देशों ने 'अगले दशक के लिए संयुक्त दृष्टि (2025–2035) जारी की तथा जापान से भारत में 10 खरब येन (लगभग 67 अरब डॉलर) के निजी निवेश का नया लक्ष्य निर्धारित किया। यह शोध पत्र द्वितीयक डेटा पर आधारित है तथा इन विकासों के रणनीतिक निहितार्थों को समझने का प्रयास करता है।

शब्दकोशः *भारत–जापान संबंधय विशेष रणनीतिक साझेदारीय CEPA, परमाणु सहयोग समझौताय ACSA, क्वाड (QUAD), हिंद–प्रशांतय बुलेट ट्रेनय ODA, निवेश लक्ष्य।*

प्रस्तावना

21वीं सदी के आरंभ में भारत एवं जापान के बीच संबंधों ने एक नया रणनीतिक आयाम ग्रहण किया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद 28 अप्रैल 1952 को दोनों देशों के बीच शांति संधि हुई, जिसने आधुनिक कूटनीतिक संबंधों की शुरुआत की। तब से लेकर अब तक ये संबंध राजनीतिक, रक्षा, आर्थिक, विज्ञान–प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों तक विस्तारित हो चुके हैं। इन संबंधों की विशेषता यह है कि ये दो एशियाई प्रजातांत्रिक राष्ट्रों के बीच एक मूल्य–आधारित साझेदारी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मुक्त एवं खुले हिंद–प्रशांत क्षेत्र के निर्माण हेतु संयुक्त दृष्टि रखती है।

[*] *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

जुलाई 2026 में आयोजित 16वें वार्षिक शिखर सम्मेलन में दोनों देशों ने रक्षा–सुरक्षा, आर्थिक साझेदारी एवं जन–से–जन संपर्क को आगे बढ़ाने हेतु तीन प्राथमिकता क्षेत्रों पर सहमति व्यक्त की, जो इस साझेदारी की निरंतरता को दर्शाता है।

वर्ष 2000 में तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री के जापान दौरे के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को 'वैश्विक साझेदारी' का दर्जा दिया गया, जिसे 2006 में 'रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' तथा 2014 में 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' तक उन्नत किया गया। यह क्रमिक उन्नयन इस बात का सूचक है कि 21वीं सदी में दोनों देशों ने एक–दूसरे की रणनीतिक सार्थकता को नई दृष्टि से पहचाना है।

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य इस 'नए दौर' की प्रमुख विशेषताओं, उपलब्धियों, चुनौतियों एवं भविष्य की संभावनाओं का तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इसमें आर्थिक साझेदारी, रक्षा–सुरक्षा सहयोग, बुनियादी ढाँचा विकास, हिंद–प्रशांत रणनीति एवं प्रौद्योगिकी सहयोग जैसे आयामों का विस्तृत परीक्षण किया गया है।

शोध पद्धति

वर्तमान अध्ययन द्वितीयक डेटा पर आधारित वर्णनात्मक–विश्लेषणात्मक शोध प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक सर्वे या प्रयोगशाला आधारित डेटा संग्रह नहीं किया गया है, बल्कि विश्वसनीय द्वितीयक स्रोतों से उपलब्ध आंकड़ों एवं दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है।

डेटा संग्रह के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं:

- भारतीय विदेश मंत्रालय की द्विपक्षीय संबंध संबंधी ब्रीफ एवं संयुक्त विज्ञप्तियाँ।
- जापान के विदेश मंत्रालय एवं भारत में जापानी दूतावास की रिपोर्टें।
- भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के व्यापार सांख्यिकी एवं भारतीय दूतावास टोक्यो के आर्थिक आंकड़े।
- JICA, JETRO, DPIIT, इंवेस्ट इंडिया एवं PIB द्वारा प्रकाशित निवेश एवं ODA आंकड़े।
- NHSRCL / JICA की बुलेट ट्रेन परियोजना संबंधी रिपोर्टें।
- शोध पत्रिकाओं, विश्वविद्यालयों के प्रकाशनों एवं प्रतिष्ठित समाचार स्रोतों के विश्लेषण।

विश्लेषण के लिए मुख्य रूप से 2000 से 2026 तक की अवधि को आधार बनाया गया है। आंकड़ों को सारणीबद्ध एवं चित्रात्मक रूप में प्रस्तुत कर निष्कर्षों को सुदृढ़ किया गया है। यह सतर्कता बरती गई है कि वित्त वर्ष (अप्रैल–मार्च) एवं कैलेंडर वर्ष के आंकड़ों के बीच भेद स्पष्ट रहे तथा निवेश 'लक्ष्यों' को वास्तविक 'वितरण' से अलग पहचाना जाए।

द्वितीयक डेटा आधारित अध्ययन की एक सीमा यह है कि इसमें प्राथमिक सर्वे या क्षेत्रीय अवलोकन द्वारा प्राप्त जानकारी शामिल नहीं होतीय अतः विश्लेषण पहले से प्रकाशित आंकड़ों की पहुँच एवं विश्वसनीयता तक सीमित रहता है। इस कमी को पूरा करने हेतु इस अध्ययन में विभिन्न स्रोतों कृ सरकारी दस्तावेज, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टें तथा शोधपत्रिकाओं कृ से प्राप्त आंकड़ों का क्रॉस–सत्यापन किया गया है, ताकि तथ्यात्मक सटीकता सुनिश्चित की जा सके। विश्लेषणात्मक ढाँचे के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के यथार्थवादी (realist) एवं उदारवादी (liberal) दृष्टिकोणों का समन्वय किया गया है कृ पूर्व सुरक्षा हितों एवं शक्ति संतुलन को समझाता है, जबकि उत्तर आर्थिक पारस्परिकता, संस्थागत सहयोग एवं मूल्य–आधारित साझेदारी के महत्व को रेखांकित करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः 1952 से 2000 तक

भारत एवं जापान के बीच सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संबंध सदियों पुराने हैं। ईस्वी सन् 752 में भारतीय बौद्ध भिक्षु बोधिसेन ने जापान के नारा के तोदाईजी मंदिर में महाबुद्ध की प्रतिष्ठा की थी। वर्ष 1903 में स्थापित 'जापान–इंडिया एसोसिएशन' जापान का सबसे प्राचीन अंतर्राष्ट्रीय मैत्री संगठन है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, भारत ने सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग नहीं लिया, बल्कि जापान के साथ 28 अप्रैल 1952 को एक स्वतंत्र शांति संधि की, जिसने आधुनिक कूटनीतिक संबंधों का आरंभ किया। शीत युद्ध के दौरान दोनों देश अलग–अलग वैश्विक खेमों में रहे, जिससे संबंध सीमित रहे। तथापि, जापान ने 1958 से भारत को आधिकारिक विकास सहायता देना प्रारंभ किया और आज भी वह भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय विकास सहयोगी है। 1998 के पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद जापान ने भारत के विरुद्ध प्रतिबंध लगाए थे, किंतु 21वीं सदी के आरंभ में बदलते भू–रणनीतिक परिवेश ने दोनों देशों को एक–दूसरे के समीप लाया।

1990 के दशक में भारत की आर्थिक उदारीकरण नीति तथा जापान के निवेश पुनरुत्थान ने द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया। भारत की 'लुक ईस्ट' (Look East) नीति, जिसे बाद में 'एक्ट ईस्ट' (Act East) नीति के रूप में परिष्कृत किया गया, ने जापान जैसे पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ साझेदारी को रणनीतिक प्राथमिकता बनाया। इसी काल में जापान की अपनी 'मुक्त एवं खुले हिंद–प्रशांत' (FOIP) की दृष्टि ने भारत को एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार के रूप में पहचाना। इन परिवर्तनों ने 21वीं सदी में संबंधों के उत्थान की संरचनात्मक आधारशिला रखी।

21वीं सदी में संबंधों का नया दौर

- **रणनीतिक साझेदारी का विकास**

21वीं सदी में संबंधों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिंदु उनका क्रमिक रणनीतिक उन्नयन रहा है। वर्ष 2000 में 'वैश्विक साझेदारी', 2006 में 'रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' तथा 2014 में 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी' की स्थापना हुई। 2006 से नियमित वार्षिक शिखर सम्मेलन आरंभ हुए। वर्ष 2013 ऐतिहासिक रहा, जब सम्राट अकिहितो एवं साम्राज्ञी मिचिको ने भारत का दौरा किया यह किसी भी सम्राट का पहला राज्य दौरा था।

अगस्त 2025 में प्रधानमंत्री के जापान दौरे के अवसर पर दोनों देशों ने 'अगले दशक के लिए संयुक्त दृष्टि (2025–2035) जारी की, जो आठ स्तंभों आर्थिक संबंध, आर्थिक सुरक्षा, गतिशीलता, पारिस्थितिक स्थिरता, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार, स्वास्थ्य, जन–से–जन संपर्क तथा भारतीय राज्यों एवं जापानी प्रीफेक्चरों के बीच साझेदारी पर केंद्रित एक दस वर्षीय रणनीतिक मार्गदर्शक है।

- **आर्थिक एवं व्यापारिक संबंध**

भारत–जापान व्यापार विगत वर्षों में निरंतर वृद्धि दर्शा रहा है। भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, द्विपक्षीय व्यापार वित्त वर्ष 2020–21 में 15.33 अरब डॉलर से बढ़कर 2025–26 में 27.47 अरब डॉलर तक पहुँचा है। वर्ष 2011 में लागू 'भारत–जापान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता' (CEPA) ने द्विपक्षीय व्यापार को संरचनात्मक आधार प्रदान किया। तथापि, व्यापार असंतुलन एक चुनौती बना हुआ है वित्त वर्ष 2023–24 में भारत का निर्यात 5.15 अरब डॉलर था, जबकि जापान से आयात 17.69 अरब डॉलर का रहा, जिससे भारत के पास लगभग 12.5 अरब डॉलर का व्यापार घाटा उत्पन्न हुआ।

भारत का जापान को प्रमुख निर्यात पेट्रोलियम उत्पाद, लौह अयस्क, कार्बनिक रसायन, समुद्री उत्पाद, वस्त्र तथा रत्न–आभूषण है, जबकि जापान से मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक वस्तु, लौह–इस्पात, रसायन, परिवहन उपकरण तथा हाइब्रिड/इलेक्ट्रिक वाहनों का आयात होता है। द्विपक्षीय व्यापार के आंकड़े नीचे तालिका 2 एवं चित्र 1 में प्रस्तुत किए गए हैं।

- **निवेश एवं बुनियादी ढाँचा**

जापान भारत में अग्रणी निवेशकों में से एक है। मार्च 2022 में जापानी प्रधानमंत्री किशिदा के भारत दौरे के दौरान 2022–2027 की अवधि के लिए जापान से भारत में 5 खरब येन (सार्वजनिक एवं निजी) के निवेश एवं वित्तपोषण का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। यह लक्ष्य केवल तीन वर्षों में ही प्राप्त कर लिया गया। अगस्त

2025 में दोनों देशों ने अगले दशक के लिए 10 खरब येन (लगभग 67 अरब डॉलर) के निजी निवेश का नया एवं सर्वाधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया।

जापानी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की भारत में उपस्थिति निरंतर बढ़ रही है। अक्टूबर 2024 तक भारत में 1,434 जापानी कंपनियाँ एवं 5,205 परिचालन इकाइयाँ सक्रिय थीं, जो अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है।

बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र में सबसे उल्लेखनीय परियोजना मुंबई–अहमदाबाद उच्च–गति रेल (बुलेट ट्रेन) है। यह 508 किलोमीटर लंबी परियोजना जापान की शिंकानसेन तकनीक पर आधारित है, जिसका डिजाइन वेग 350 किमीध्घंटा तथा परिचालन वेग 320 किमी/घंटा है। जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA) इस परियोजना की लागत का 81 प्रतिशत वित्तपोषण कर रही है लगभग 88,087 करोड़ रुपये (लगभग 1.5 खरब येन) का ऋण 0.1 प्रतिशत ब्याज दर, 50 वर्ष की अवधि एवं 15 वर्ष की अनुग्रह अवधि पर।

यह परियोजना सितंबर 2017 में आरंभ हुईय भूमि अधिग्रहण एवं कोविड–19 के कारण देरी हुई। वर्तमान में इसकी लगभग 55 प्रतिशत भौतिक प्रगति पूर्ण हो चुकी है। प्रारंभिक खंड (सूरत–बिलीमोरा) 15 अगस्त 2027 तक एवं संपूर्ण कॉरिडोर 2029 तक कार्यान्वित होने का लक्ष्य है। पूर्ण होने पर मुंबई–अहमदाबाद का यात्रा समय 7–8 घंटे से घटकर लगभग 2 घंटा रह जाएगा।

- **रक्षा एवं सुरक्षा सहयोग**

रक्षा क्षेत्र में सहयोग इस साझेदारी के रणनीतिक केंद्र का निर्माण करता है। वर्ष 2015 में दोनों देशों ने रक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तथा सैन्य सूचना सुरक्षा संबंधी समझौतों पर हस्ताक्षर किए। 9 सितंबर 2020 को 'अधिग्रहण एवं क्रॉस–सर्विसिंग समझौता' (ACSA) हस्ताक्षरित हुआ, जो 11 जुलाई 2021 से प्रभावी हुआ।

ACSA दोनों सेनाओं के बीच रसद, ईंधन, यातायात, अनुरक्षण एवं बेस सुविधाओं के पारस्परिक आदान–प्रदान के लिए कानूनी ढाँचा प्रदान करता है। यह 10 वर्ष के लिए है तथा स्वतः नवीनीकृत होता है।

दोनों देशों के बीच '22 विदेश एवं रक्षा मंत्रिस्तरीय संवाद' 2018 से स्थापित हैय जापान भारत का संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दूसरा 22 साझेदार था। अब तक इसके तीन चरण पूर्ण हो चुके हैं। वर्ष 2022 में साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में सहयोग ज्ञापन भी हस्ताक्षरित हुआ। द्विपक्षीय नौसैन्य अभ्यास (जिमेक्स) तथा तटरक्षक संयुक्त अभ्यास नियमित रूप से आयोजित किए जा रहे हैं।

- **परमाणु सहयोग, हिंद–प्रशांत एवं क्वाड**

11 नवंबर 2016 को टोक्यो में भारत एवं जापान के बीच 'परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग हेतु सहयोग समझौता' हस्ताक्षरित हुआ, जो 20 जुलाई 2017 से प्रभावी हुआ। यह समझौता 40 वर्ष के लिए है तथा इसके अंतर्गत जापानी कंपनियाँ भारत के नागरिक परमाणु रिएक्टरों हेतु उपकरण एवं प्रौद्योगिकी की आपूर्ति कर सकती हैं, बशर्ते वे अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) की सुरक्षा व्यवस्थाओं के अधीन हों। इसके साथ ही एक 'दृष्टिकोण एवं समझौता टिप्पणी' जोड़ी गई, जिसमें भारत के परमाणु परीक्षण से संबंधित शर्तें शामिल हैं।

भारत की 'पूर्व की ओर देखो' नीति, 'महासागर' दृष्टि तथा हिंद–प्रशांत महासागर पहल (IPOI) एवं जापान की 'मुक्त एवं खुले हिंद–प्रशांत' (FOIP) की दृष्टि के बीच रणनीतिक अभिसरण है।

क्वाड (QUAD – क्वाड्रिलेटरल सुरक्षा संवाद) ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान एवं संयुक्त राज्य अमेरिका का एक अनौपचारिक रणनीतिक समूह है, जिसकी पहल 2007 में जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने ली थी। यह 2008 में निष्क्रिय हो गया था तथा नवंबर 2017 में मनीला के ASEAN शिखर सम्मेलन के दौरान पुनर्जीवित हुआ। मार्च 2021 में पहला नेतृत्व–स्तरीय (वर्चुअल) शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ तथा सितंबर 2021 में वाशिंगटन में पहला व्यक्तिगत शिखर सम्मेलन हुआ। 24 मई 2022 को टोक्यो में चौथा शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ।

इन विकासों के पीछे चीन के बढ़ते प्रभाव एवं दक्षिण चीन सागर में तनाव एक प्रेरणा के रूप में कार्य करते हैं। तथापि, क्वाड को किसी सैन्य गठबंधन के रूप में नहीं, बल्कि एक मूल्य–आधारित सहयोग के रूप में देखा जाता है, जिसका उद्देश्य क्षेत्र में मुक्त, खुले एवं समावेशी व्यवस्था का निर्माण है।

- **विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा एवं सांस्कृतिक संबंध**

दोनों देशों के बीच 70 से अधिक द्विपक्षीय संवाद–विधियाँ स्थापित हैं, जो अंतरिक्ष, साइबर सुरक्षा, अर्धचालक, स्वास्थ्य, इलेक्ट्रॉनिक्स, वित्त एवं शहरी विकास जैसे विविध क्षेत्रों को कवर करती हैं। जापान भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय विकास सहयोगी है तथा उसकी संचयी ODA प्रतिबद्धता 6.978 खरब येन से अधिक है।

वित्त वर्ष 2023–24 में जापान की व्क। प्रतिबद्धता 893.645 अरब येन तथा वितरण 580.81 अरब येन रहा। 28 मार्च 2025 को छह ODA ऋण समझौते (191.736 अरब येन) हस्ताक्षरित हुए। जन–से–जन संपर्क के अंतर्गत छात्र आदान–प्रदान, योग–आयुर्वेद का प्रचार तथा भारतीय प्रतिभाओं के लिए जापान में रोजगार के अवसर बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है। अर्धचालक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं क्वांटम तकनीक जैसे उभरते क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है।

- **जन–से–जन संपर्क एवं कौशल विकास**

जन–से–जन संपर्क इस साझेदारी का एक महत्वपूर्ण आयाम बन चुका है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के जापान में चेयर एवं योग–प्रशिक्षण कार्यक्रम भारतीय संस्कृति के प्रसार का माध्यम बने हैं। जापान में योग एवं आयुर्वेद की लोकप्रियता ने सांस्कृतिक सेतु को मजबूत किया है। इसके अतिरिक्त, जापान की घटती जनसंख्या एवं बुढ़ाते समाज के संदर्भ में भारतीय कुशल एवं अर्ध–कुशल कार्यबल की माँग तेजी से बढ़ी है। 'विशिष्ट कुशल कर्मचारी' (Specified Skilled Worker) योजना के अंतर्गत भारतीय प्रवासियों के लिए जापान में रोजगार के नए अवसर खुले हैं, तथा दोनों देशों ने सामाजिक सुरक्षा समझौता भी हस्ताक्षरित किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग भी उल्लेखनीय है। भारत के आईआईटी (IIT) जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों तथा जापानी विश्वविद्यालयों के बीच संयुक्त शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं अनुसंधान सहयोग का विस्तार हुआ है। जापानी भाषा के शिक्षण हेतु भारत में कई केंद्र स्थापित किए गए हैं, ताकि भाषाई बाधा को कम किया जा सके। ये पहल न केवल आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि दोनों समाजों के बीच आपसी समझ एवं सम्मान के भाव को भी विकसित करती हैं, जो किसी भी स्थायी रणनीतिक साझेदारी का आधार होते हैं।

तालिका 1: भारत–जापान संबंधों के प्रमुख मील के पत्थर (2000–2026)

वर्ष	प्रमुख विकास
2000	वैश्विक साझेदारी की स्थापना
2006	रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारीय वार्षिक शिखर सम्मेलन आरंभ
2011	व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता लागू
2013	सम्राट अकिहितो का भारत दौरा (पहला सम्राट दौरा)
2014	विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक साझेदारी
2016	परमाणु ऊर्जा शांतिपूर्ण उपयोग समझौता हस्ताक्षरित
2018	2+2 विदेश–रक्षा मंत्रिस्तरीय संवाद स्थापित
2020	ACSA रक्षा रसद समझौता हस्ताक्षरित (2021 से प्रभावी)
2022	5 खरब येन निवेश लक्ष्य (2022–2027): 75 अरब डॉलर मुद्रा–विनिमय
2025	अगले दशक की संयुक्त दृष्टि (2025–2035): 10 खरब येन निवेश लक्ष्य

स्रोतः भारतीय विदेश मंत्रालय (MEA) एवं जापान MOFA के दस्तावेज।

तालिका 2: भारत–जापान द्विपक्षीय व्यापार (वित्त वर्षवार, अरब डॉलर)

वित्त वर्ष	भारत का निर्यात	भारत का आयात	कुल व्यापार
2020–21	4.43	10.90	15.33
2021–22	6.18	14.39	20.57
2022–23	5.46	16.49	21.96
2023–24	5.15	17.69	22.85
2024–25	6.25	18.90	25.15
2025–26	6.04	21.43	27.47

स्रोतः भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़े, भारतीय दूतावास टोक्यो। नोटरू वित्त वर्ष 2025–26 के आंकड़े दूतावास की नवीनतम संकलन रिपोर्ट पर आधारित हैं।

तालिका 3: भारत को जापान की ODA — प्रतिबद्धता एवं वितरण (अरब येन)

वित्त वर्ष	प्रतिबद्धता	वितरण
2018–19	537.405	266.757
2020–21	356.296	264.560
2022–23	567.500	459.000
2023–24	893.645	580.810
2024–25	191.736	439.131

स्रोतः JICA/भारत के आर्थिक कार्य विभागय भारतीय दूतावास टोक्यो।

उपर्युक्त आंकड़ों एवं विकासों के विश्लेषण से कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष उभरकर सामने आते हैं। प्रथम, भारत–जापान संबंध अब केवल एक आर्थिक या व्यापारिक संबंध नहीं रहे, बल्कि ये एक बहुआयामी रणनीतिक साझेदारी में परिवर्तित हो चुके हैं। वर्ष 2000 से 2025 तक की अवधि में संबंधों का क्रमिक उन्नयन 'वैश्विक' से 'विशेष रणनीतिक' तक इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि दोनों देशों ने एक–दूसरे की भू–रणनीतिक सार्थकता को गहराई से पहचाना है।

द्वितीय, आर्थिक आयाम में व्यापार वृद्धि उत्साहजनक है, किंतु व्यापार असंतुलन एक स्थायी चुनौती है। भारत का जापान के साथ व्यापार घाटा वित्त वर्ष 2023–24 में लगभग 12.5 अरब डॉलर तक पहुँच गया, क्योंकि भारत मुख्य रूप से मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं परिवहन उपकरणों का आयातक बना हुआ है। CEPA के अधिकतम उपयोग एवं भारतीय निर्यात क्षमता के विकास के बिना इस असंतुलन को दूर करना कठिन होगा। तथापि, 10 खरब येन के निवेश लक्ष्य एवं बढ़ती जापानी कंपनियों की उपस्थिति (1,434 कंपनियाँ, 5,205 इकाइयाँ) इस दिशा में एक सकारात्मक संकेत है।

तृतीय, बुनियादी ढाँचा एवं विकास सहयोग इस साझेदारी का सबसे ठोस आयाम है। बुलेट ट्रेन परियोजना न केवल एक परिवहन परियोजना है, बल्कि जापानी प्रौद्योगिकी एवं वित्तपोषण क्षमता का प्रतीक बन चुकी है। JICA का अत्यंत अनुकूल ऋण (0.1 प्रतिशत ब्याज, 50 वर्ष अवधि) भारत के बुनियादी ढाँचे के विकास हेतु अद्वितीय सहयोग है। यह भी उल्लेखनीय है कि जापान भारत का सबसे बड़ा द्विपक्षीय विकास सहयोगी है तथा उसकी संचयी व्क। प्रतिबद्धता 6.978 खरब येन से अधिक है।

चतुर्थ, रक्षा–सुरक्षा सहयोग तेजी से गहरा रहा है। ACSA, 22 संवाद, परमाणु समझौता तथा क्वाड का पुनरुज्जीवन इस बात के द्योतक हैं कि दोनों देश अब एक–दूसरे की सुरक्षा गणना में शामिल हैं। यह साझेदारी मुख्य रूप से चीन के बढ़ते प्रभाव एवं हिंद–प्रशांत में बदलते सामरिक परिवेश के प्रतिक्रियात्मक उत्तर के रूप में विकसित हुई है। तथापि, यह किसी सैन्य गठबंधन के रूप में नहीं, बल्कि मूल्य–आधारित सहयोग के रूप में संचालित है, जो दोनों देशों की 'रणनीतिक स्वायत्तता' के सिद्धांत के अनुरूप है।

पंचम, प्रौद्योगिकी एवं मानव संसाधन विकास का आयाम भविष्य की संभावनाओं को दर्शाता है। अर्धचालक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वच्छ ऊर्जा एवं साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग दोनों देशों की पूरक अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठाएगा। जापान की उच्च प्रौद्योगिकी एवं भारत की बाजार एवं मानव पूंजी का संयोजन एक 'जीत–जीत' की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।

षष्ठ, सामरिक संवाद का संस्थागतकरण इस साझेदारी की एक विशेषता है। 70 से अधिक द्विपक्षीय संवाद–विधियाँ एवं नियमित वार्षिक शिखर सम्मेलन यह सुनिश्चित करते हैं कि सहयोग केवल घोषणाओं तक सीमित न रहे, बल्कि निरंतर नीतिगत समीक्षा के माध्यम से आगे बढ़े। यह संस्थागत ढाँचा किसी भी द्विपक्षीय संबंध के लिए आवश्यक स्थिरता एवं पूर्वानुमानिता प्रदान करता है, जिससे निवेशकों, व्यवसायों एवं नीति–निर्माताओं को दीर्घकालिक योजना बनाने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि अन्य कई द्विपक्षीय संबंधों की तुलना में भारत–जापान साझेदारी अधिक स्थिर एवं प्रगतिशील दिखाई देती है।

चुनौतियाँ एवं सीमाएँ

इन उपलब्धियों के बावजूद कई चुनौतियाँ विद्यमान हैं। प्रथम, व्यापार असंतुलन एवं CEPA के अपूर्ण उपयोग ने आर्थिक साझेदारी की पूर्ण क्षमता को सीमित किया है। द्वितीय, बुलेट ट्रेन परियोजना में भूमि अधिग्रहण, पर्यावरणीय स्पष्टीकरण एवं लागत में वृद्धि के कारण देरी हुई है, जिससे इसकी मूल समय–सारणी पर प्रभाव पड़ा है। तृतीय, दोनों देशों की आर्थिक संरचना में भिन्नता एवं निवेश वातावरण संबंधी चिंताएँ निजी निवेश के प्रवाह को प्रभावित करती हैं। चतुर्थ, क्षेत्रीय सुरक्षा परिदृश्य में जटिलता तथा चीन के साथ दोनों देशों के आर्थिक संबंधों का संतुलन एक कूटनीतिक चुनौती बना हुआ है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

21वीं सदी में भारत–जापान संबंध एक 'नए दौर' में प्रवेश कर चुके हैं। वर्ष 2000 के बाद से इन संबंधों का क्रमिक रणनीतिक उन्नयन, व्यापार एवं निवेश में वृद्धि, रक्षा समझौतों का विस्तार तथा बुलेट ट्रेन जैसी परियोजनाओं का क्रियान्वयन इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि यह साझेदारी अब एक 'विशेष रणनीतिक एवं वैश्विक' स्तर पर पहुँच चुकी है। अगस्त 2025 में जारी 'अगले दशक की संयुक्त दृष्टि (2025–2035)' तथा 10 खरब येन के निवेश लक्ष्य ने इस साझेदारी को एक दीर्घकालिक दिशा प्रदान की है।

यह साझेदारी केवल दो देशों के बीच का द्विपक्षीय संबंध नहीं है, बल्कि हिंद–प्रशांत क्षेत्र में मुक्त, खुले एवं समावेशी व्यवस्था के निर्माण हेतु एक रणनीतिक आधार बन चुकी है। जापान की उच्च प्रौद्योगिकी एवं पूंजी तथा भारत की बाजार एवं मानव संसाधन का संयोजन भविष्य में इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं सुरक्षा व्यवस्था को नई दिशा दे सकता है।

इन उपलब्धियों को टिकाऊ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि व्यापार असंतुलन को दूर करने हेतु भारतीय निर्यात क्षमता का विकास किया जाए, CEPA का अधिकतम उपयोग किया जाए, बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में देरी को कम किया जाए तथा निवेश वातावरण को और अधिक अनुकूल बनाया जाए। द्वितीयक डेटा पर आधारित यह अध्ययन यह निष्कर्ष देता है कि 21वीं सदी में भारत–जापान संबंध एक ठोस एवं बहुआयामी साझेदारी के रूप में स्थापित हो चुके हैं, जिनका भविष्य उज्ज्वल एवं सार्थक दिखाई देता है।

इस संदर्भ में कुछ व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं। प्रथम, CEPA के अवशिष्ट शुल्क घटाने एवं भारतीय कृषि, फार्मास्युटिकल्स एवं आईटी सेवाओं के लिए जापानी बाजार खोलने पर तत्परता दिखाई जानी चाहिए, ताकि व्यापार असंतुलन कम हो सके। द्वितीय, बुलेट ट्रेन परियोजना एवं अन्य बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में भूमि अधिग्रहण एवं पर्यावरणीय स्पष्टीकरण की प्रक्रिया को सरल एवं समय–बद्ध बनाया जाए। तृतीय, अर्धचालक, क्लाउड कंप्यूटिंग एवं साइबर सुरक्षा जैसे रणनीतिक प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में संयुक्त उत्पादन एवं

अनुसंधान केंद्र स्थापित किए जाएँ। चतुर्थ, भाषाई बाधा को दूर करने हेतु जापानी भाषा शिक्षण का विस्तार किया जाए तथा कौशल मान्यता समझौतों को मजबूत किया जाए, ताकि भारतीय कुशल कार्यबल के लिए जापान में रोजगार के अवसर बढ़ सकें।

समग्र रूप में, भारत–जापान संबंध एशिया के दो प्रमुख प्रजातांत्रिक राष्ट्रों के बीच मूल्य–आधारित सहयोग का एक जीवंत उदाहरण बन चुके हैं। बदलते भू–रणनीतिक परिवेश, चीन के बढ़ते प्रभाव तथा हिंद–प्रशांत में सामरिक प्रतिस्पर्धा के बीच यह साझेदारी न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि संपूर्ण क्षेत्र के लिए स्थिरता एवं समृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारक बन चुकी है। भविष्य के दशकों में इस साझेदारी की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि दोनों देश अपने आर्थिक असंतुलनों, निवेश बाधाओं एवं क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों का किस प्रकार सामूहिक रूप से समाधान करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय विदेश मंत्रालय, 'India-Japan Bilateral Relations' (मई 2025)। https://www-mea-gov-in/Portal/ForeignRelation/India-Japan-May-2025-pdf.
2. भारतीय विदेश मंत्रालय, 'India-Japan Joint Vision for the Next Decade, PIB, 29 अगस्त 2025। https://www-pib-gov-in/PressReleasePage-aspx\PRID¾2161986.
3. भारतीय दूतावास टोक्यो, 'Economic — India-Japan RelationsA https://www-indembassy-tokyo-gov-in/eoityo_pages/NjQw.
4. Japan MOFA, Japan-India Summit Meeting and Working Dinner A https://www-mofa-go-jp/s_sa/sw/in/pageite_000001_00005-html.
5. भारतीय विदेश मंत्रालय, 'Entry into force of Civil Nuclear Agreement', 20 tqykbZ 2017A https://www-mea-gov-in/press-releases-htm\dtl/28678.
6. Embassy of Japan in India/JETRO, List of Japanese Companies in India ¼October 2024½*A https://www-in-emb-japan-go-jp/files/100867260-pdf.
7. भारतीय विदेश मंत्रालय, 'Transcript of Special Briefing on PM's visit to Japan', 29 अगस्त 2025A https://www-mea-gov-in/media-briefings\dtl/40067.
8. India Foundation, 'Issue Brief 9 — India-Japan Relations', 11 सितंबर 2025। https://indiafoundation.in/wp-content/uploads/2025/09/compressed-Issue-Brief-9-India-Japan-Relations-11-September-2025-pdf.
9. भारतीय विदेश मंत्रालय, '16th India-Japan Annual Summit Joint Statement', जुलाई 2026। https://www-mea-gov-in/press&releases\dtl/41391.

❑❑❑